भूमिका

हम एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहां वृद्धों की संख्या बढ़ती जा रही है। पिछले कुछ वर्षों से दुनिया की आबादी में बहुत बड़ा बदलाव देखा जा रहा है। दुनिया में उच्च जन्म दर एवं उच्च मृत्यु दर के स्थान पर अब निम्न जन्म दर एवं निम्न मृत्यु दर की प्रवृत्ति देखी जा रही है। जिससे वृद्धजनों की संख्याऔर अनुपात दोनों में बहुत वृद्धि हुई है। जिस गति से जनसंख्या वृद्धि हो रही है और पूर्वानुमान किया जा रहा है, उससे स्पष्ट है कि इक्कसवीं शताब्दीके अंत तक वृद्धों की आबादी जनसंख्या की आधी तो हो ही जायेगी। शाश्वत है जन्म हुआ है तो मृत्यु भी होना ही है। जीवनकाल में प्रत्येकव्यक्ति को विभिन्न अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है, जिनमें वृद्धावस्था भी है। वृद्धावस्था को कालिक क्षय के प्रारंभिक अवस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है। जिसमें बढ़ती उम्र के साथ शारीरिक व मानसिक क्षमताओं के ढलने या क्षीण होने की प्रक्रिया शुरु हो जाती है एवं कई तरह की समस्याओं के साथ विभिन्न प्रकार के रोगों के होने की सम्भावनाएँबढ़ने लगती हैं।जनसंख्या वृद्धि कई समस्याओं को जन्म देती है, और बुढ़ापे से जुड़ी समस्याअपने आप में महत्त्वपूर्ण है। जो कई तरह के चुनौतियों (यथा- मनोवैज्ञानिक कारक, बीमारी, शारीरिक दुर्बलताइत्यादि) की ओर इंगित करता है।

मानव जीवन के कुछ मूल तत्त्वहैं,जिनकी हम सभी अनदेखी करते हैं।भारतीय समाज अपने जीवन मूल्यों को लेकर हमेश ही सजग रहा है। हमारे ऋषि-मुनियों ने वृद्धावस्था की खुशहाली हेतु जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक के लिए स्वानुशासित नियम बताए हैं। समय-समय पर विभिन्न संत-महात्माओं ने भी समाज में उत्पन्न कुरीतियों का दूर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है।पाश्चात्य जीवनशैली से प्रभावित होने के कारण वृद्धों की कठिनाईयाँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। विभिन्न वैज्ञानिक अन्वेषणों के परिणामस्वरूप व्यक्ति का जीवन स्तर तो सुधरा है किंतु नैतिक स्तर पर गिरावट दर्ज की जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि नैतिक गिरावट और भोगवादी संस्कृति की ओर झुकाव ही वृद्धों की समस्याओं की मूल में है। मनुष्य योनि में हमारा जन्म क्यों और किस हेतु हुआ है, इसको भूलते जा रहे हैं।

वृद्धावस्था की खुशहाली पर पाश्चात्य देशों में जरावैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक स्तर पर बहुत सारे शोध किए गए है। परंतुउनके शोध निष्कर्ष भारतीय समाज पर खरे नहीं उतरते हैं।इसके पीछे मुख्य कारण भारतीय संस्कृति के मूल्य हैं, जो गिरावट के बाद भी प्रत्येक व्यक्ति में अंतर्निहित है। पिछले दशकों में भारत में भी इस संदर्भ में अनेक शोध-कार्य सामाजिक, शैक्षणिक एवं सरकारी स्तर पर हुए हैं। जिसके आधार पर अनेक महत्त्वपूर्ण शासकीय योजनाओं की पहल हुयी है। किंतु अभी भी इस विषय पर काम करने की महती आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन भी इस कड़ी में एक प्रयास है।